Research Paper | E-ISSN : 2455-295X | Volume : 2 | Issue : 7 | July 2016

कथाकृतियों का विकास क्रम एवं कथासार

डॉ. सुशीला कुमारी [1]

[1] हिन्दी विभाग

ABSTRACT

Key words:

'रेणु' का कथा - साहित्य हिन्दी कथा - साहित्य के इतिहास में अपने काल की धारा को मोड़ने में अग्रणी भूमिका के साथ - परिवर्तनों प्रकार्यों और अकार्यो की प्रक्रियाओं में कालजयी कृतियों का स्वर्ण कोश है। सम्पूर्ण रेणु - सहित्य वस्तुतः जीवनकाल और नवोन्मेष का समन्वय है। उपन्यास विद्या में नये माध्यम की सृष्टि भाषा के मौलिक प्रयोग आदि इसका उदाहरण है। यह महत्त्व ऐतिहासिक दृष्टि से भी है और कथात्मक उपलब्धि की दृष्टि से भी। रेणु ने 'मैला आंचल' उपन्यास के माध्यम से आंचलिक उपन्यास का सूत्रपात किया। आंचलिक उपन्यास हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में एक नयी धारा और एक नया मोड़ बनकर उभरा। आंचलिक उपन्यास स्वातंत्रयोत्तर ग्रामीण - जीवन के परिवर्तनशील यथार्थ के संक्रांत रूप की बहुत गहराई और व्यापकता के साथ उद्‌घाटित करने में समर्थ हुआ। मैला आंचल में पहलीबार स्वातत्रयोत्तर भारतीय जीवन का इतना संश्लिष्ट चित्रण हुआ। इसमें न केवल ग्राम - जीवन के नए यथार्थ को अभिव्यक्ति मिली बल्कि अभिव्यक्ति नये और सशक्त माध्यमों के दर्शन हुए। मैला - आंचल एक अंचल को केन्द्र बनाकर उस अंचल के समग्र और संश्लिष्ट जीवन का सशक्त चित्रण करते हुए उसके माध्यम से समग्र ग्राम - जीवन की समस्याओं को ध्वनित तो किया ही, उसने उपन्यास के कथानक - विन्यास, चरित्र - चित्रण, परिवेश - योजतना, भाषा - शैली आदि में क्रांतिकारी मोड़ उपस्थित किए। उसने एक व्यक्ति के नायकत्व की परिकल्पना को हटाकर एक अंचल को ही नायक बना दिया। 'मैला - आंचल' की परम्परा में आनेवाले उनकी परवर्ती उपन्यास (परती - परिकथा) जूलूस, दीर्धतपः कितने चैराहे, और पलटू बाबू रोड़ उनकी औपन्यासिक - कला के शिखर है।

इसी प्रकार कहानी के क्षेत्र में भी रेणु का अपना अन्यतम स्थान है। नयी कहानी स्वाधीनता - परवर्ती भारतीय जीवन के यथार्थ के विविधि आयामों को प्रामणिक अनुभव के धरातल पर चित्रित करती है। इसमें उसने अपने - अपने परिवेश के अनुभवों को अपनी - अपनी दृष्टियों में रचते है। इसलिए नई कहानी में नगर, महानगर, कस्बे और गाँव के जीवन यथार्थों के अनुभव सम्पन्न चित्र है,सबका अपना - अपना रंग है। ग्रामीण - जीवन के यथार्थ को चित्रित करने वाले कहानीकारों में रेणु अप्रतिम है। उन्होंने अपनी कहानियों में लोक - भाषा, लोक - कथा, लोक - गीत, लोक - परिवेश आदि के माध्यम से ग्रामीण - जीवन की विविध छवियों, नवीन परिस्थितियों और संवेदनाओं, नवीन समस्याओं और संघर्षो के अनुपम चित्र उकैर या चित्रित किये है। 'तीसरी कसम' विश्व कथा साहित्य में समादत है। अन्य कहानियाँ भी समय शिल्प एवं संवेदना की दृष्टि से अव्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त रेणु के उन अनछुए पहलुओं पर विमर्श की आवश्यकता है। जिसके लिए देश - विदेश के शोधार्थी अन्वेशन जारी रखे हुए है। इसके बावजूद इतने विशद कथांचल में शूल भी है। धूल भी है। और फूल भी है। इन्हीं धूल और फूलों के बीच खड़े रेणु को नये नजरीये से देखना है कि देश की आजादी के पहले अपने देश की आजादी की लड़ाई थी और उसे अक्षुण्ण रखने के लिए। चैराहे पर खड़े होकर देश के लिए नई राह दिखाई, किन्तु वह राह क्यों नही राज मार्ग बन पाई। कहाँ रह गया आपका डॉ. प्रशांत, कहाँ रह गया जग मोहन, सर्वजीत आदि। कहाँ छुट गई कमला फातिमा आदि। इन्हीं युगीन संदर्भो एवं सवालों के घेरे में रेणु के साहित्य का अनुशीलन अपेक्षित एवं अपरिहार्य है जिससे उनके प्रति मेरे अनुराग की अभिव्यक्ति हो सके।

स्वातंत्रयोत्तर भारतीय जीवन में राजनीतिक का दबाव बहुत गहरा है। स्वाधीनता प्राप्ति के पाश्चात् राजनीतिक धीरे - धीरे राष्ट्रीय सामाजिक जीवन के लिए व्याग्र से छूटकर व्यक्तिगत योग - क्षेम और स्वार्थपरता

के पंक में लिप्त होने लगी। यह राजनीति उन नेताओं से शुरू हुई जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन के समय व्याग्र किया था और अब स्वदेशी सरकार के महत्वपूर्ण पदो पर थे। लोकतांत्रिक पद्धति स्वीकार की गई, किन्तु प्रत्येक दल सत्ता प्राप्त करने के प्रयास में चुनाव के समय पैसा, पद, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि बुराइयों को खुलकर उपयोग करने लगा। और राष्ट्र के स्तर पर व्याप्त चुनाव की ये बुराइयाँ अदालत पंचायतों ग्राम - पंचायतों टाउन - एरिया और म्युनिसपैलटी के चुनावों में भी धनीभूत होने लगी। ग्राम - पंचायतों के चुनाव में गाँव के राजनीति चकबन्दी आदि सिलसिले में स्वार्थ प्रेरित राजनीति के दाँव - पेच और तेजी से उभरे। शहरों की अपेक्षा, गाँव - राजनीति के प्रभाव से अधिक आक्रांत हुए, क्योंकि शासन की दृष्टि भूमि सुधार की ओर गई। योजना - विकास के क्रम में सहकारिता और चकबन्दी लागू हुई। कृषि क्रांति के लिए नहरे बनी। ग्राम पंचायते बनी ट्यूबवैल, सभापति सरपंच आदि कि चुनाव की व्यवस्था हुई। पंचायत सैकेट्री, बी0डी0ओ0, ए0सी0ओ0 आदि की नियुक्तियाँ हुई और बहुत सी बाते हुई। यह सब एक बहुत बड़े उदेश्य के से प्रेरित होकर हुआ था। किन्तु व्यावहार में उस उदेश्य की सिद्धि नहीं हो सकी। जातिवाद और स्वार्थी राजनीति ने सर्वत्र अपना प्रभाव दिखाया। गाँव की सारी सामूहित नैतिकता, मूल्य औ संबंध तेजी से छिन्न - भिन्न हो गए और आर्थिक विषमता और भी विषम और धनी हो गई और स्वार्थपरता में फँसी राजनीति इसे तोड़ने का बराबर आश्वासन देती रही। भ्रष्ट नेताओं और अफसरों की साँठ - गाँठ दिखाई पड़ती है। भ्रष्ट राजनीति के कारण ही न्यायलयों में असुरक्षा बढ़ गई और गरीब आदमी अपने को असहाय समझने लगा। राजनीति की इस विसंगति, विदूषता और अमानवीयता ने समाज को न जाने कितने स्तरों पर तोड़ा, कितनी कुंठाए पैदा की और कितना त्रास पैदा किया।

नई कहानी ने इस यथार्थ को पहचाना। एक और शहरी के संदर्भ में दूसरी और ग्राम कहानियों ने ग्राम के संदर्भ में एक सत्य का साक्षात्कार किया। ग्राम संदर्भ में लिखी गई, इस चेतना की कुछ विशिष्ट कहानियाँ है - दाने की पत्तियाँ, हंसा जाइ अकेला। (मारकण्डेय), खण्डहर की आवाज, 'सड़क' मनुष्य चिन्ह (हिमांशु जोशी) लाल झण्डा, (राजेन्द्र अवस्थी) नई कथा, रामबाबू इत्यादि।

ग्राम कथा ने हमारी कहानी को धरती से इतना समन्वित कर दिया है कि हम उसमें हर क्षण उन्मुक्त प्रकृति और सहज जीवन प्रदान किया है। वह किसी भी कथा - साहित्य के लिए गर्व की वस्तु हो सकता है। किसानों के सुख - दुःख में यह धरती हँसती और रोती है। पशु - पक्षियों के प्रति ग्रामीण जन का स्नेह और ममता अद्‌भुत संबंध होता है। इस संबंध में पारिवारिक स्निग्धता और स्वस्थता होती है।

इन ग्राम कथाकारों में रेणु का विशेष स्थान है। वैसे हर कहानीकार अपने अनुभव अपनी दृष्टि और अपने शिल्प में कही - न - कही विशिष्ट है। किन्तु रेणु का तो अपना सर्वथा एक नया अंदाज है। वे अपनी धरती के साथ गहरी सम्यक्ति जितनी रेणु में है उतनी कम लोगों में देखने को मिलता है। रेणु की कहानियाँ भी उपन्यासों की तरह अलग लगती है। रेणु के पात्र प्रायः निम्नवर्ग के एवं अवर्ण होते है। फिर भी प्रगतिशील आलोचक उनका नाम धीमें से ही लेते है। प्रगति रचनाकारों की सूची में उनका नाम कम दिखलाई पड़ता है। कारण कि उन्होंने निम्नवर्ग के जीवन दुखों, की ही गाथा नहीं गाई है, इस वर्ग के जीवन में जो रस होता है उसे भी दिखाया गया है। सच तो यह है कि रेणु का कथा - साहित्य इसलिए अन्य कथाकारों से अलग है।

REFERENCES

[1] आंचलिक उपन्यास - डॉ. ज्ञानचंद गुप्त
[2] आधुनिक हिन्दी उपन्यास - डॉ. भीष्म साहनी
[3] आधुनिक हिन्दी कहानी - लक्ष्मी नारायण लाल
[4] मैला आंचल - फनीश्वर नाथ रेणु
[5] कितने चैराहे - फनीश्वर नाथ रेणु
[6] दीर्घ तपः - फनीश्वर नाथ रेणु
[7] परतीः परिकथा - फनीश्वर नाथ रेणु
[8] पल्टू बाबू रोड - फनीश्वर नाथ रेणु
[9] अगिनीखोर - फनीश्वर नाथ रेणु
[10] नेपाली क्रांति कथा - फनीश्वर नाथ रेणु
[11] हिन्दी उपन्यास - डॉ. सुरेश सिन्हा